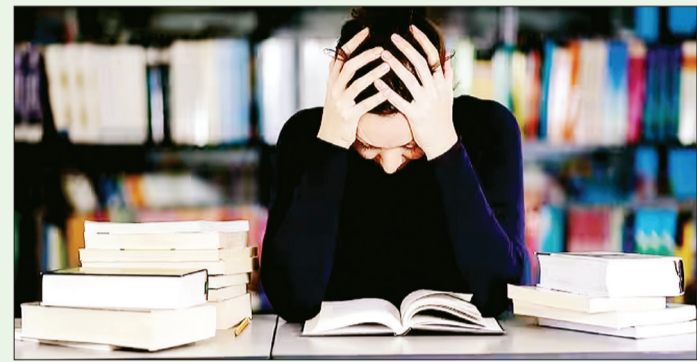


16 से 18 साल के विद्यार्थी ज्यादा दबाव में

विभिन्न तरह के शोध और मनोचिकित्सकों की मानें तो तीन तरह का दबाव, जो उनके आसपास ही रहता है, उन्हें आत्महत्या के लिए मजबूर करता है। धीरे-धीरे यह दबाव डिप्रेशन में बदलता जाता है। इस तरह के लक्षण ज्यादातर 16 से 18 वर्ष और उससे ऊपर की आयु वाले विद्यार्थियों में देखे गए हैं। इनमें स्कूल-कॉलेज के छात्र और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुटे प्रतिभागी शामिल हैं।

आखिर क्या है वजह-मित्र मंडली, करियर और अभिभावक, यह तीन तरह का दबाव, जो एक साथ चलता रहता है, हर किसी को नजर नहीं आता। इससे पीड़ित विद्यार्थी जब स्कूल-कॉलेज में होता है तो वह अंदर ही अंदर इस दबाव को बढ़ाता जाता है। इसके बाद अभिभावकों की बारी आती है। हालांकि सभी अभिभावक इस तरह का दबाव नहीं डालते हैं कि अगर बच्चा सफल नहीं हुआ तो सब खत्म हो जाएगा। वे अपने बच्चों को प्रोत्साहन देते हैं, लेकिन कई बार बच्चों को किसी तरह से जैसे, पड़ोसी द्वारा, रिश्तेदार से या अपने किसी दोस्त के मां-बाप से बहुत कुछ पता चल जाता है। उसके मम्मी-पापा उसे लेकर क्या सोचते हैं। उसकी पढ़ाई-लिखाई के लिए लोन लिया है या जमीन बेच दी है, जैसी बातें जब उसे मालूम पड़ती हैं तो वह दबाव में आ जाता है। इसके बाद वह पहले से कहीं ज्यादा मेहनत करने लगता है, वही दबाव उसे घेरे रहता है। नतीजा वह दबाव बाद में उसे आत्महत्या तक पहुंचा देता है। तीसरा करियर में लक्षित सफलता नहीं मिलती है तो भी विद्यार्थी राह भटक जाते हैं।

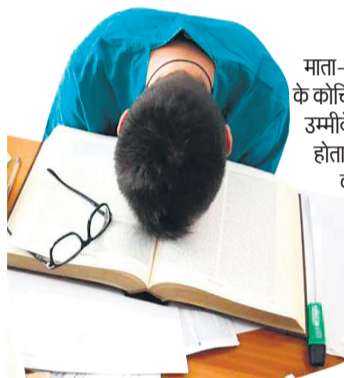


अध्ययन की आवश्यकता

आत्महत्या एक चिंताजनक मुद्दा है, अवांछित और खराब परिणाम के कारण छात्र आत्महत्या कर लेते हैं। इस समस्या से उबरने के लिए उनके पास पर्याप्त ज्ञान और आत्मसम्मान की कमी है। इसके अलावा, कम आत्मसम्मान, ज्ञान की कमी, आत्मविश्वास, धैर्य की कमी, परीक्षा में असफलता और मानसिक स्वास्थ्य समस्या आत्महत्या के पीछे मुख्य कारण थे।

ऊपर दिए गए परिणामों और चर्चा के प्रकाश में यह पाया गया है कि दुनिया में हर जगह समस्याएं मौजूद हैं, लेकिन आत्महत्या/जानबूझकर खुद को नुकसान पहुंचाने (डीएसएच) के प्रयास पीड़ित पर मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और जैविक प्रभावों से संबंधित हैं। छात्र आत्महत्या को कैसे रोका जाए, इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, पहचानने के लिए अध्ययन की आवश्यकता है कि क्या पारिवारिक संरचना और माता-पिता की बातचीत में सुधार से आत्मघाती सोच की अभिव्यक्ति कम हो सकती है या नहीं। दूसरा कॉलेज के छात्रों के आत्मघाती विचार उनके माता-पिता की अनिश्चित रोजगार स्थिति से जुड़े होते हैं, जो बदले में उनके वित्तीय अस्थिरता का कारण बनता है। तीसरा कॉलेज के छात्र जो अपने पाठ्यक्रम से तनावग्रस्त हैं और भविष्य में असफलता के डर से आत्महत्या पर विचार कर सकते हैं।

सफलता के दबाव में मौत की राह पर किशोर



बच्चों से परिजनों की अपेक्षाओं का बढ़ना

माता-पिता और शिक्षकों को चाहिए कि वे हर विद्यार्थी को एक ही तराजू में तौलकर न देखें। कोटा और अन्य शहरों के कॉचिंग प्रतिष्ठानों में आत्महत्या के मामलों की बढ़ती संख्या इस प्रवृत्ति को दर्शाती है, अपर्याप्त क्षमता के साथ उच्च उम्मीदें। यह एक प्रतिस्पर्धी दुनिया है और बेहतर कॉलेजों और संस्थानों में प्रवेश पूरी तरह से योग्यता के आधार पर होता है। ग्रेड लाने की आशा में किसी बच्चे को कॉचिंग कक्षाओं में भेजना एक कल्पना है, जो निराश करने वाली है। कॉचिंग संस्थानों के लिए यह एक व्यावसायिक उद्यम है और वे अधिकतम संख्या में छात्रों को उनकी क्षमता के आधार पर लेने का प्रयास करेंगे, जरूरी नहीं कि यह प्रतिभा के आधार पर हो। इससे हमारे पास सीढ़ी के ऊपरी छोर से लेकर सबसे निचले पायदान तक छात्रों का मिश्रण होगा और पैमाने के निचले पायदान पर रहने वाले लोग हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं, लेकिन उनके माता-पिता, जिन्होंने अपने बच्चे को जीवन में बेहतर शुरुआत देने के लिए अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा खर्च किया है, से उम्मीदें अवास्तविक रूप से ऊंची बनी हुई हैं।

विफलता का भय और आत्महत्या

जब आप वास्तविक 'असफलता के डर' के कारण स्कूली परीक्षा समाप्त होने से पहले कई बच्चों की जान लेने के बारे में सुनते हैं तो ये वे बच्चे नहीं हैं, जो असफल हो गए हैं, ये वे बच्चे हैं, जो डरते हैं कि वे असफल हो सकते हैं। हमने अपने समाज में असफलता का इतना डर कैसे पैदा कर दिया है कि स्कूली बच्चे इस मुकाम तक पहुंच गए हैं।

उच्च आत्म अपेक्षा

यदि आप छात्रों की सफलता और छात्रों की आत्महत्या के मामलों को लें और उनकी तुलना करें, तो आप देखेंगे कि आत्महत्या के मामले में आत्महत्या का समय दोगुना हो गया है। भारत में हर साल 15 से 29 आयु वर्ग के बीच प्रति 100,000 भारतीयों पर 40 लोग, दूसरे शब्दों में हमारे समाज का सबसे अधिक उत्पादक आयु वर्ग, खुद को मार देते हैं, जो देश में लगभग एक तिहाई आत्महत्याओं के लिए जिम्मेदार है। 'परिवार से शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने की अनिवार्य आवश्यकता, अक्सर दुर्व्यवहार की प्रवृत्ति, छात्र के मनोबल को कमजोर कर देती है, जो विफलता और टूटने का सबसे बड़ा कारण है।

समस्या का समाधान

युवावस्था जीवन का संक्रमण काल होता है जिसमें युवाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खासतौर से करियर, जॉब, खुद की इच्छाएं, व्यक्तिगत समस्याएं जैसे, भविष्य की पढ़ाई आदि। जब वह इस अवस्था में आता है, अपरिपक्वता के कारण कई बार परेशानियां आती हैं जिससे डिप्रेशन, एंजायटी, सायकोसिस, पर्सनैलिटी डिस्ऑर्डर की स्थिति बन जाती है। इन सब परिस्थितियों से वह जैसे-तैसे निकलता है तो परिवार की जरूरत से ज्यादा अपेक्षाओं के बोझ तले दब जाता है। ऐसे लक्षण होने पर बगैर देर किए काउंसलर से संपर्क करें। व्यक्ति को अकेला न छोड़ें और उसे हर प्रकार से सहयोग दें। उसके पास दवाइयां न छोड़ें और कोई धारदार हथियार न रखें। कोई पतली रस्सी या ब्लेड भी यहां वहां न पड़ी रहने दें। इलाज के बाद भी उनको देखरेख में रखें, क्योंकि वे आत्महत्या का प्रयास दोबारा भी कर सकते हैं। अगर वह काम पर जाना बंद कर दें और बात-बात पर चिढ़ने लगें तो उसके दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने की कोशिश करें। जरूरत पड़े तो स्वयं उसके कार्यालय या स्कूल जाकर बात करें। पुरुष अपने तनाव के कारणों को किसी से शेयर नहीं करते, इसलिए उनके सफल आत्महत्या करने के मामले महिलाओं से चार गुना ज्यादा होते हैं, वहीं महिलाएं अपनी बात ज्यादा शेयर करती हैं जिससे उनके सुसाइड की कोशिश करने पर बचा लिया जाता है। उनके कोशिश करने के मामले पुरुषों से चार गुना ज्यादा होते हैं। किशोर व युवाओं की मृत्यु का तीसरा सबसे बड़ा कारण आत्महत्या है। निजात के लिए आत्महत्या के कारण उससे ग्रसित मरीज के लक्षण एवं भविष्य में उसकी पुनरावृत्ति न हो, इसका भी ध्यान रखा जाए।

नदियों में अंधाधुंध खनन

अंधाधुंध रेत खनन, जमीन पर कब्जा, नदी के बाढ़ क्षेत्र में स्थाई निर्माण, ही छोटी नदी के सबसे बड़े दुश्मन है। दुर्भाग्य से जिला स्तर पर कई छोटी नदियों का राजस्व रिकार्ड नहीं है, उनको आसान तरीके से नाला बना दिया जाता है, जिस साहबी नदी पर शहर बसाने से हर साल गुरुग्राम डूबता है, उसका बहुत सा रिकार्ड ही नहीं है। झारखंड-बिहार में बीते वाली सौ साल के दौरान हजारों से ज्यादा छोटी नदी गुम हो गईं। हम यमुना में पैसा लगाते हैं, लेकिन उसमें जहर ला रही हिंडन, काली को और गंदा करते हैं। कुल मिलाकर यह नल खुला छोड़कर पोछा लगाने का श्रम करना जैसा है। छोटी नदी केवल पानी के आवागमन का साधन नहीं होती। उसके चारों तरफ समाज भी होता है और पर्यावरण भी, नदी किनारे किसान भी हैं और कुम्हार भी, मछुआरा भी और धीमर भी नदी की सहेत बिगड़ी तो तालाब से लेकर कुएं तक में जल का संकट हुआ। सो परोक्ष और अपरोक्ष समाज का कोई पैसा वर्ग नहीं है, जो इससे प्रभावित नहीं हुआ हो। नदी-तालाब से जुड़कर पेट पालने वालों का जब जल-निधियों से आसरा खत्म हुआ तो मजबूरन उन्हें पलायन करना पड़ा। इससे एक तरफ जल निधियां दूषित हुईं तो दूसरी तरफ बेलगाम शहरीकरण के चलते महानगर अर्बन स्लम में बदल रहे हैं। स्वास्थ्य, परिवहन और शिक्षा के संसाधन महानगरों में केन्द्रित होने के कारण ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक संतुलन भी इससे गड़बड़ा रहा है। जाहिर है कि नदीजीवी लोगों की निराशा ने समूचे समाज को समस्याओं की नई सौगात दी है।



सुनिश्चित हो नदियों कि अवरिलता

सबसे पहले छोटी नदियों का एक सर्वे और उसके जल तंत्र का दस्तावेजीकरण हो। फिर छोटी नदियों कि अवरिलता सुनिश्चित हो, उससे रेत उत्खनन और अतिक्रमण को मानव-द्रोह अर्थात् हत्या की तरह गंभीर अपराध माना जाए। नदी के सीधे इस्तेमाल से बंधें। नदी में पानी रहेगा तो तालाब, जोहड़, समुद्र रहेगे और इससे कुएं या भू-जल। स्थानीय इस्तेमाल के लिए वर्षा जल को पारंपरिक तरीके जैला कर एक-एक बूंद एकत्र किया जाए। नदी के किनारे कोटनाशक के इस्तेमाल, सागुन और शौच से परहेज के लिए जन जागरूकता और वैकल्पिक तंत्र विकसित हो। सबसे बड़ी बात नदी को सहेजने का जिम्मा स्थानीय समाज, खासकर उससे सीधे जुड़े लोगों को दिया जाए, जैसे कि मद्रास से पुदुचेरी तक ऐरी के रखरखाव के जल-पंचायत हैं।



नदी पर सौंदर्यीकरण और उनका दोहन

बीते दो दशक में ही नदी पर घाट, पुलिया और सौंदर्यीकरण के नाम पर जमकर सीमेंट तो लगाया गया, लेकिन उसमें पानी की आवक के रास्ते बंद कर दिए गए। आज नदी के नाम पर नाला रह गया है। इसकी धारा पूरी तरह सूख गई है। जहां कभी पानी था, अब वहां बालू-रेत उत्खनन वालों ने बहाव मार्ग को उबड़-खाबड़ और दलदली बना दिया। छतरपुर शहरी सीमा में एक तो जगह-जगह जमीन के लोभ में जो कच्चे हुए उससे नदी का तालाब से जोड़-घटाव की रास्तों पर विराम लग गया। फिर संकट मोचन पहाड़ियों पर अब हरियाली की जगह कच्चे-पक्के मकान दिखने लगे, कभी बरसात की हर बूंद इस पहाड़ पर रुकती थी और धीरे-धीरे रिस कर नदी को पोषित करती थी। आज यहां बन गए हजारों मकानों का मल-मूत्र और गंदा पानी सीधे सिंघाड़ी नदी में गिरकर उसे नाला बना रहा है। जब यह नदी अपने पूरे स्वरूप में थी तो छतरपुर शहर से निकलकर कोई 22 किलोमीटर का सफर तय कर हमा, पिंडुवा, कलानी गांव होते हुए उर्मिल नदी में मिल जाती थी। उर्मिल भी यमुना तंत्र की नदी है। नदी जिनद थी तो शहर के सभी तालाब, कुएं भी लबाबल रहते थे। दो दशक पहले तक यह नदी 12 महीने कल-कल बहती रहती थी। इसमें पानी रहता था। शहर के सभी तालाबों को भरने में कभी सिंघाड़ी नदी की बहुत बड़ी भूमिका होती थी। तालाबों के कारण कुओं में अच्छा पानी रहता था, लेकिन आज वह खुद अपना ही अस्तित्व से जूझ रही है।

बीते दस साल में 15 से 24 साल के युवाओं में आत्महत्या के मामले 200 प्रतिशत तक बढ़े हैं। इसके तेजी से बढ़ने के पीछे अब तक केवल आर्थिक कारणों को जिम्मेदार माना जाता रहा है, लेकिन कई रिसर्च में खुलासा हुआ कि युवाओं में इसकी बड़ी वजह स्कूल और परिवार का दबाव है। आत्महत्या का भी मनोविज्ञान है। आत्महत्या के मानसिक, सामाजिक, साइकोलॉजिकल, बायोलॉजिकल एवं जेनेटिक कारण होते हैं। जिन परिवारों में पहले भी आत्महत्या हुई है, उनके बच्चों द्वारा यह रास्ता अपनाने की आशंका है। रिसर्च में सामने आया कि जिनमें आत्महत्या के जौन होते हैं, उनमें बायोकेमिकल परिवर्तन हो जाते हैं। इससे बच्चे या व्यक्ति का मानसिक संतुलन अव्यवस्थित हो जाता है। इसके कई कारण होते हैं जैसे तनावपूर्ण जीवन, परेल्ड समस्याएं, मानसिक रोग इत्यादि। जिन बच्चों में आत्महत्या के बारे में सोचने की आदत (सुसाइडल फैंटेसी) होती है, वही आत्महत्या ज्यादा करते हैं।



डॉ. पूनम यादव
मानसिक रोग विशेषज्ञ, कल्या अरुण
भंडिकल कॉलेज शाहजपुर

महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि आत्महत्या, दुनिया में मौत का दसवां सबसे बड़ा कारण है। टीनएजर और 35 वर्ष से कम आयु वर्ग में आत्महत्या असमय मृत्यु का सबसे बड़ा कारण है। हर साल दुनिया में एक से दो करोड़ लोग आत्महत्या की कोशिश करते हैं, लेकिन उनकी मौत नहीं होती।



स्कूल-कॉचिंग के छात्रों में यह प्रमुख कारण

बड़े शहर एजुकेशन हब होने के कारण यहां देशभर के छात्र-छात्राएं शिक्षा लेने आते हैं और इसी वजह से यहां ऐसे प्रकरण ज्यादा सामने आ रहे हैं। कॉचिंग के छात्रों में आत्महत्या के बड़े कारण मानसिक दबाव, मानसिक रोग व पारिवारिक झगड़े लगते हैं। कोई भी आत्महत्या करने वाला रातों-रात इसका इरादा नहीं करता। युवा तो इसके लिए पहले प्लानिंग भी करते हैं। यहां तक कि वे कुछ दिन पहले से ही में अब शिकायत नहीं करूंगा, अब नहीं आऊंगा, मैं चला जाऊंगा जैसे संकेत भी देते हैं। हालांकि यह संकेत उनके साथ रहने वाले मित्रों या परिजनों को पता चलते हैं। कई फोन कॉल्स पर तो यह पता चलता है कि आत्महत्या का कारण इतनी छोटी बात है, जिसे मात्र शेयर करने से हल किया जा सकता है। यदि इन बातों की तरफ ध्यान दिया जाए तो आत्महत्या का इरादा बदला जा सकता है।

संज्ञोत्तर का चुनाव कर पढ़ाई करना

बच्चे को उसकी रुचि के विपरीत संज्ञोत्तर दिलाने का निर्णय भी उसे सुसाइड की ओर ले जा सकता है। फिर अर्थहीन प्रतिस्पर्धा और सामाजिक व नैतिक मूल्यों में गिरावट, अकेलापन धीरे-धीरे आत्महत्या की तरफ प्रेरित करता है। युवक आत्महत्या के बारे में ज्यादा बात करने लगता है। कई बार आत्महत्या करने की कोशिश करता है और रिपोर्ट, शराब या अन्य नशा ज्यादा करता है। ऐसा व्यक्ति बहुत ज्यादा दुखी रहने लगता है और अनिद्रा का शिकार हो जाता है।

होमसिकनेस

युवाओं का अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रहने के कारण भी वे असफल होने पर आत्महत्या का रास्ता चुन रहे हैं। वहां आप स्कूल से दूर हो, किसी नई जगह पर चले गए हों या बस किसी यात्रा पर हों, आपको 'घर की याद' सामक चीज का अनुभव हो सकता है। होमसिकनेस के लक्षण हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन सामान्य तौर पर, होमसिकनेस आपको परेशान, व्यथित, अलग-थलग या अकेला महसूस करा सकता है।

गंगा देश की संस्कृति की पहचान और मानव विकास की सहयात्री है। इसके संरक्षण के अभी तक किए गए सभी प्रयास अमूर्त ही रहे हैं। वैसे तो हर दिन समाज, देश और धरती के लिए बहुत जरूरी है, लेकिन छोटी नदियों पर ध्यान देना अधिक जरूरी है। गंगा, यमुना जैसी बड़ी नदियों को स्वच्छ रखने पर तो बहुत काम हो रहा है, पर ये नदियां बड़ी इंसिलियन बनी हैं, क्योंकि इनमें बहुत सी छोटी नदियां आकर मिलती हैं। यदि छोटी नदियों में पानी कम होगा तो बड़ी नदी भी सूखी रहेगी। यदि छोटी नदी में गंदगी या प्रदूषण होगा तो वह बड़ी नदी को प्रभावित करेगा।

अपने ही अस्तित्व से जूझतीं नदियां



पंकज चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

नदियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्यादि दिवस पर

कमी नहीं होगी। एक मोटा अनुमान है कि आज भी देश में कोई 12 हजार छोटी ऐसी नदियां हैं, जो उपेक्षित हैं, उनके अस्तित्व पर खतरा है। उन्नीसवीं सदी तक बिहार (आज के झारखंड को मिलाकर) करीब छह हजार नदियां हिमालय से उतर कर आती थीं। आज इनमें से महज 400 से 600 का ही अस्तित्व बचा है। मधुवनी, सुपौल में बहने वाली तिलयुगा नदी कभी कोसी से भी विशाल हुआ करती थी। आज उसकी जलधारा सिमटकर कोसी की सहायक नदी के रूप में रह गई है। सीतामढ़ी की लखनदेई नदी को तो सरकारी इमारतों ही चटा गईं। नदियों के इस तरह रूठने और उससे बाढ़ और सुखाड़ के दर्द साथ-साथ चलने की कहानी देश के हर जिले और कस्बे की है। लोग पानी के लिए पाताल का सीना चीर रहे हैं और निराशा हाथ लगती है, उन्हें यह समझने में दिक्कत हो रही है कि धरती की कोख में जल भंडार तभी लबाबल रहता है, जब पास बहने वाली नदियां हंसती खेलती हो।



प्यास के लिए बदनाम बुंदेलखंड

बुंदेलखंड तो प्यास, पलायन के लिए बदनाम है। यहां के प्रमुख शहर छतरपुर में एक नदी की सहेत बिगड़ने से वेनिस की तरह जल से लबाबल रहने वाला शहर भी प्यास हो गया। महाराजा छत्रसाल ने यह शहर बसाया था। यहां नदी के उतार चढ़ाव की गुंजाइश कम ही है। तीन बरसाती रातों के गढ़ेवा नाला, सटई रोड के नाला और चंद्रपुरा गांव के बरसाती नाला। इन तीनों का पानी अलग-अलग रास्तों से डेरा पहाड़ी पर आता और यह जलधारा एक नदी बन जाती। वृष्टि इसमें खुब सिंघाड़े होते तो लोगों ने इसका नाम सिंघाड़ी नदी रख दिया। छतरपुर कभी वेनिस तरह था-हर तरफ तालाब और उसके किनारे बरिसियां और इन तालाबों से पानी का लेन-देन चलता था-सिंघाड़ी नदी का। बरसात की हर बूंद तीन नालों में आती और फिर एकाकार होकर सिंघाड़ी नदी के रूप में प्रवाहित होती। इस नदी से तालाब जुड़े हुए थे, जो एक तो पानी को बहता हुआ निर्मल रखते, दूसरा यदि तालाब भर जाए तो उसका पानी नदी के जरिए से दूसरे तालाबों में बह जाता। सिंघाड़ी नदी से शहर का संकट मोचन तालाब और ग्वाल मगरा तालाब भी भरता था। इन तालाबों से प्रताप सागर और किशोर सागर तथा रानी तलेया भी नालों और ओतनों (तालाब में ज्यादा जल होने पर जिस रास्ते से बाहर बहता है, उसे ओना कहते हैं) से होकर जुड़े थे। अभी दो दशक पहले तक संकट मोचन पहाड़ियों के पास सिंघाड़ी नदी चोड़े पाट के साथ सालभर बहती थी। उसके किनारे घने जंगल थे जिनमें हिरन, खरगोश, अजगर, तेंदुआ लोमड़ी जैसे पर्याप्त जानवर भी थे। नदी किनारे रमसान घाट हुआ करता था। कई खेत इससे सीधे जाते और कुछ लोग ईंट के भट्टे लगाते थे।

नदियों के मार्गों में अतिक्रमण

नदी की मुख्य धारा के मार्ग में अतिक्रमण होता जा रहा है। नदी के कछार ही नहीं प्रवाह मार्ग में ही लोगों ने मकान बना लिए हैं। कई जगह धारा को तोड़ दिया गया है। पुरे नदी में कहीं भी एक बूंद पानी नहीं है। नदी के मार्ग में जो छोटे-छोटे बंधा बने थे वे भी खत्म हो गए हैं। पूरी नदी एक पगडंडी और ऊबड़-खाबड़ मैदान के रूप में तब्दील होकर रह गई है। जबकि दो दशक पहले तक इस नदी में हर समय पानी रहता था। नदी के घाट पर शहर के कई लोग हर दिन बड़ी संख्या में नहाने जाते थे। यहां पर पहुंचकर लोग योग-व्यायाम करते थे, कुश्ती लड़ने के लिए यहां पर अखाड़ा भी था। भूतेश्वर भगवान का मंदिर भी यहां प्राचीन समय से है। यह पूरा क्षेत्र हरे-भरे पेड़-पौधों और प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित था, लेकिन समय के साथ-साथ यहां का नैसर्गिक सौंदर्य नष्ट होता चला गया। नदी अब त्रासदी बन गई है। आज नदी के आसपास रहने वाले लोग मानसून के दिनों में भी एक से दो किलोमीटर दूर से सार्वजनिक हैंड पंप से पानी लाने को मजबूर हैं, जब-तब जल संकट का हल्ला होता है तो या तो भूजल उलीचने के लिए पंप रोपे जाते हैं या फिर मुहल्लों में पाइप बिछाए जाने लगते हैं, लेकिन इसका जवाब किसी के पास नहीं होता कि जमीन की कोख या पाइप में पानी कहां से आएगा? जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं। ऐसे में छोटी नदियां धरती के तापमान को नियंत्रित रखने, मिट्टी की नमी बनाए रखने और हरियाली के संरक्षण के लिए अनिवार्य हैं। नदियों के किनारे से अतिक्रमण हटाने, उसमें से बालू-रेत उत्खनन को नियंत्रित करने, नदी की गहराई के लिए उसकी समय-समय पर सफाई से इन नदियों को बचाया जा सकता है। सबसे बड़ी बात समाज यदि इन नदियों को अपना मानकर सहेजने लगे तो इससे समाज का ही भविष्य उज्जल होगा।

